सं. ग्रो. वि./एफ.डी./36045 — चूंकि शृरियाणा के राज्यपाल की राग्रे है कि मैं श्री साकस्वरी इन्जिनियरिंग कि प्रा िल., प्लाट नं 70, सैक्टर-6, फरीराबाद, के अविक भी लाल तो यादव तथा प्रबन्धकों के महत्र इसमें इस है वाद लिखित मामले में कोई भौधोगियाँ विवाद है ;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यामनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिए, प्रव, श्रौद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तायों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रिधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उनत अधिनियम की धारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायानगय एत्रं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उनन प्रश्नभक्षेत्र श्रमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:--

न्या श्री लालजी यादव की सेवायों का समापत न्यायोचित तथा ठी के हैं ? यदि नहीं, तो बहु किस राहृत का द्वाचदार है? सं शो.वि./एफ.डी./36052.—चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं० साकम्बरी इंजिनियरिंग कम्पनी प्रा० लि०., प्लाट नं० 70, सैक्टर-6, फरीदाबाद, के श्रीमक श्री राम देव यादव तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामलें में कोई ग्रोद्योगिक विवाद है;

भीर चूं कि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्याल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-अम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथपढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245 दिनांक 8 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठिन श्रम न्यायालय फरीदाबाद, की विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत प्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री राम देव यादव की सेवाग्रों का समापन न्यायाँचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हक्षदार है ? संब ग्रो.वि., 36059. —चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं. साकम्बरी इंजी. कि प्रा. लि., प्लाट नं. 70, सैक्टर-6, फरीदाबाद के श्रमिक श्री महेश प्रसाद सिंह तथा उनके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद, को न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, प्रब, ग्रीद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) में खंड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15245, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिसूचना की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, की विवादग्रस्त या उससे सुसंगत था उससे संस्वन्धित नीचे लिखा मामला न्यायानिर्णय एवं पंचाट तीन माप्त में देने हेतु निहिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है:—-

क्या श्री महेण प्रशाद सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायौचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

•सं, भो.वि./एफ.डी/36066. —चू कि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं० शकम्बरी इन्जी. क० प्रा. लि. प्लाट नं. 70, सैक्टर-6, फरीदाबाद के श्रमिक श्री सुभाष चन्द्र तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखिल मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है;

भौर चूं कि हरिकाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसिलए, अब, अौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खंड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके दारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415 3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 करवरी, 1958 दारा उक्त अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद की विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायानिणाँय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बंधिया तो विवादग्रस्त सामला है यो विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री सुभाष चन्द्र की सेवाओं का समापन त्यायीचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहक का हकदार है ?